No. ५५०६ -घ

Title चण्डी जी की आरती

Author ×

Extent ५

Subject संपूर्णम्

नं० ५५०६-घ

चंडीजीकीआरती

पत्राणि ५ (पूर्ण)

नं. १०१५

ॐनमोदेव्यैनमः॥ॐप्रथमदेवी
जीकेस्मरणकीजैहृदयदयस्त
नप्रकाशितं॥देहोहष्टादिनोमा
ई॥श्रीचंडीचरणप्रणामपहम॥ १
हथ्यांमैकंकणकनामैऊंडलही

से-२०१२ क
चण्डीकीआरती
५ जन
स्तुति



प
१ दयरगे ॥ श्रीचंडीचरणप्रणमामपहे २
तारत्नजडाजजडी ॥ कैवांमैछुंयरगना
दयरगे ॥ श्रीचंडीचरणप्रणमामपहे
तिलकसिंहरललाटसोहै ॥ अगर
चंदनलेपितं ॥ कनकसिंघासन
बैठोमाई ॥ श्रीचंडीचरणप्रनमा

य है ॥ ३ ॥ आदिमाया जुगादिमाया भ
माया है ॥ जगमोहिनी ॥ ब्रह्मा विस्नु म
हेश थाप्यो ॥ श्री चंडी चरण प्रनमामि है ॥ ४
कौन जग मै बैलैसी सीता जु कहिये
कौन जग मै डुपदा ॥ कौन जग मै बल

व सीजुकहिये॥कौनजुगमेकालि
२ का॥श्रीचंडीचरणप्रनमाम्यहं॥५॥
सत्यजुगमैसीताजुकहिये॥द्वापर
जुगमैद्रुपदा॥त्रीताजुगमैलछमी
जुकहिये॥कलिजुगमेकालि

का ॥ श्री चंडीचरणप्रनमाम्यहं ॥ ८ ॥ कौ
नकीयरमैसावित्री कहिये ॥ कौनके
यरमैलक्ष्मी ॥ कौनकेघरमैप्रथंगौ
री ॥ श्री चंडीचरणप्रनमाम्यहं ॥ ७ ॥ ब्र
ह्माकेघरमैसावित्री कहिये ॥ विष्णु

च केचरमैलक्ष्मीमहाहड केचरमैश्र
१ र्येगीगौरी॥ श्रीचंडीचरणप्रनमाम्यहं ८
काहिकारणभईजननी॥ काहिका
रणभईहेदेवी॥ काहिकारणकमलि
का॥ श्रीचंडीचरणप्रनमाम्यहं॥ ए॥ ज
3

सकारणमईहेजननी॥भोगका
रणभार्या॥प्रजाकारणमईहेदेवी
प्रेतकालिकेकालिका॥श्रीचंडीच
णप्रनमाम्यहं॥१०॥वेद्मवप्रत्रिशूल
सोहे॥शेववक्रप्रकाशितं॥सिंहपीठ

च
४

परचंडे भवानी ॥ द्वाणदाण मै मेरा
जैते ॥ श्रीचंडी चरण प्रनमाम्यहं ॥ ११ ॥
दैत्यमारे ग्रहहरसिंगारे ॥ सर्वदेवनके
रक्षाकरे ॥ शरणभगवतितावो चंडी
श्रीचंडी चरण प्रणमाम्यहं ॥ १२ ॥ प्रका

सप्तपपतालपूजा ॥ तीनभुवनमै
सेवाकरु ॥ रिद्धिसिद्धअग्रगामदिजोमा
ई ॥ श्रीचंडीचरणप्रणमाम्यहं ॥ २४ ॥ अ
कासपतालकरतपूजा ॥ वेरवेताल
केसंगमै ॥ चौसटजोगिनीकरतसे

१३

च
५

सेवा॥ श्रीचंडीचरणप्रणमामपहे २४
हणेकीकाथीरैपेपीथाले॥ श्रगर
कपूरकीवातवनी॥ रमकारफहोत
आरती॥ श्रीचंडीचरणप्रनमामपहे

इति श्री ब्रह्मादि विरचितं चंडीजी की आरती ॥
मामम